बिहार विधान सभा भवन शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी द्वारा जिन पांच सामाजिक अभिशापों (नशामुक्त, अपराधमुक्त, बाल श्रम मुक्त, बाल विवाह मुक्त और दहेज मुक्त) से मुक्त परिवार को बनाने संबंधी सामाजिक अभियान की शुरुआत की गयी है उसमें 'नशामुक्त हमारा परिवार' प्रथम और सर्वाधिक प्रमुख सामाजिक अभियान है। नशा का सेवन करने वाला व्यक्ति अपनी बुद्धि, आत्म संयम, इच्छा शक्ति, कर्तव्य ज्ञान, निर्णय शक्ति, करूणा, प्रेम, स्वार्थ और त्याग की भावना को खो देता है। ऐसे लोग जीवित रहकर भी मृतक के समान रहते हैं। इनका जीवन औचित्यहीन हो जाता है । नशा को अपराध की जननी भी माना जाता है । इतिहास गवाह है कि जिस परिवार, समाज और राष्ट्र में नशाखोरी होती है, उसे गर्त में समाने में देर नहीं लगती। मिश्र, यूनान और रोम की कहानी कुछ ऐसी ही थी। हमें हर हाल में अपने परिवार को नशा से दूर रखना ही होगा। नशा से दूर रहना चरित्र निर्माण की पहली कसौटी है ।" यह बातें बिहार विधानसभा के माननीय अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिन्हा ने बिहार के गोपालगंज, बेतिया और समस्तीपुर में शराब के सेवन से हुई मौतों के संदर्भ में कही। श्री सिन्हा ने कहा कि नशा न केवल धन-दौलत, इज्जत-शोहरत, परिवार और समाज सबकुछ को बर्बाद कर देती है बल्कि यह सचमुच प्राणघातक है । नशापान प्रकृति के बिल्कुल प्रतिकूल है। केवल सख्त कानून से ही नशाबंदी नहीं हो सकती है। इसके लिए सामाजिक जागरूकता अभियान भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि बिहार में प्रकाश के पावन पर्व-दीपावली के अवसर पर लोगों के घरों में सदा के लिए अंधेरा फैलाने वाले नहीं बख्शे जायें और उन्हें चिन्हित कर उनके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाये ताकि समाज के ऐसे दुश्मनों को सबक मिल सके। इसके लिये विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में बैठे लोगों को ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा। उन्होंने कहा कि जहाँ भी इस तरह की घटना हो वहाँ के शासन-प्रशासन में बैठे लोगों की जिम्मेदारियां तय हो।